

१६। ग०६। म०५। न०५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

आशा सखवाथि	
2179	1

CSA ARCHIVES



ॐ नमः ४ ध्यतु कोये ॥ अथ माह नीयाय दिति ॥ द्रया ना
सिय ॥ याना याम न्या सयाय ॥ तीर्थ ॥ मधनयाय ॥ सय्य च
॥ मधनयाय ॥ ॥ देव स्नानयाचक ॥ गंगाया सलिलं
॥ सुं नानायाय पुनासनं ॥ पूत कृयाय य कानां स्नानार्थ
य ॥ ॥ ॥ तीर्थ स्नान ॥ सूत्राणि किं निवासां सः तत्सं
मी ॥ त्रिगमूकमं ॥ मृद्धि सिद्धि यत्रै पुन्यः मत्री स्नानं दया म्पदं ॥

॥ रुने तीर्थ स्नान ॥ श्री संवत् ॥ ॥ अथ नमो चक ॥ ॥ दं
मले यसं हर्तः च नं ही मणी गलं ॥ वील जा कुग चिंद्रां गु
गृहान यत्र मं ध्वनी ॥ ॥ सिंदूर ॥ युलु वद्धन कुगु स्यः लां
युने तील ह्वनां ॥ गृहान वीत्र वीत्र सीः सिंदूरं वर्ग दायकं
॥ ॥ ॥ ॥ अकि नय ॥ अकृगं सर्व वीत्र सिः वीत्र एव वत्र पुदं ॥ सर्व
मंगल दाहिन्तः ॥ गृहान यत्र मं ध्वनी ॥ ॥ ऊऊ मका नय ॥

उपवागसिद्धं ह्युः मन्त्रकृत्स्य लोचनं। गृहानवीनका
गस्यः रुतं वायं त्रुन्मम॥ ॥ स्नानकृत्स्य॥ नाना यथ
सुगंधानिः मालुया कृष्णभादय। सोऽग्निसिद्धिर्दं रुतः प
थात्रा रुतमरुम॥ ॥ अगंधनका॥ नासिय॥ ३॥ सुः
याधियाय॥ ॐ अथा समग सर्वेण कृत्स्य पूर्वकृत्स्य कामनाः
र्थं सात्रदीयधी ३ ॐ सृष्टेवतादिउग्रचक्षुर्देवी पूजाकर्तुं

उक्तं कौस४णी सुयाधेनम४॥ ॥ पृथंनम४॥ ॥ अगं
धूनका॥ गुत्रुनमस्कारं निस्यः आत्मपूजात्वं धूनक॥ ॥
धनं प्रिमा रुनी रुय॥ ॐ तालख्य वृत्ता अदलुथि सग यः
सली अमच कनन ॐ ला अ जाकि स्नान देवन तस्यं देवधि
यका अदलुथा सग य॥ मी रुनी पूजा॥ नं कया दि स्थानम४॥

॥ ॥ धनं त्रिषु श्रवणं निमित्तं कोमात्रीयूजात्वं धनं ॥
धनं उग्रवर्णं यूजा ॥ आसनं त्रय ॥ नै आध्यात्र ह क्रोदि त्या
नमः ॥ नै सिंहं सनायै यायू ॥ नै महिषा सनायै यायू ॥ नै भुं
रा सनायै यायू ॥ नै निर्भुं रा सनायै यायू ॥ ॥ ध्यानं ॥ चेतस्वा
नं काकिं अर्चयितुं स्वस्थं कृताय ॥ नै आवाहनादि यायाया
उमनीयं स्नानं च ॥ सिन्दूरं कृतं पृथग्भी उग्रवर्णं दं वनमः ॥

॥ ग्राह्यं लिखय ॥ नै धूमं भी उग्रवर्णं दं वी यायू ॥ ३ ॥ वलि ॥
यानि मूढा ॥ ॥ नूतनं चक्षुः दि यूजा ॥ नै नूतनं चक्षुः दि त्या या
यू ॥ ३ ॥ वलि ॥ यानि मूढा ॥ ॥ कात्यायनीयूजा ॥ आसनं ॥ नै
पद्मासनं यायू ॥ नै सिंहं सनयायू ॥ नै महिषा सनयायू ॥
ग्राह्यं लिख ॥ नै द्वां सै भी कात्यायनी यायू ॥ ४ ॥ वलि ॥ यानि मूढा
॥ ॥ पुष्पं स्वत्रीयूजा ॥ नै पद्मासनं यायू ॥ नै सिंहं सनयायू

ॐ महिषासन पापू ॥ ॥ श्रीं लि ॥ ॐ दुर्गा गुरु भव र्थिन
म४ ॥ ३ ॥ वलि ॥ यानि ॥ ॥ सिद्धिलक्ष्मी यज्ञ ॥ आसः
न ॥ ॐ युगासन पापू ॥ श्रीं सिद्धलक्ष्मी यज्ञ ॥ कासनाय न
म३ ॥ ॥ श्रीं लि ॥ स्वर्ग सिद्धिलक्ष्मी यज्ञ ॥ ३ ॥ वलि
॥ यानि ॥ ॥ कलसंयुगा ॥ आसं ॥ ॐ वैष्णवसन पापू ॥ ॐ
विष्णुसन पापू ॥ ॥ श्रीं लि ॥ ॐ हंससंयुक्तलक्षणयज्ञ

मृगीध्वत्रीधकि महिताय ग्रीपापू ॥ ३ ॥ वलि ॥ ॥ यन्न यानिमूडा
॥ ॐ सकलपलिवान्नयानम४ ॥ ॥ कर्मयुगा ॥ आसना ॥ ॐ क
लासन पापू ॥ ॥ श्रीं लि ॥ ॐ वां वात्रुलीकल कर्म यै ग्रीपापू ॥
३ ॥ वलि ॥ यानिमूडा ॥ ॐ सकलपनिवात्रयानम४ ॥ ॥ सगुं
लपुगा ॥ ॐ श्रवस्केदि सुवित्रं किवीखा पापू ॥ वलि ॥ ॥ ॥
॥ ॥ वामी मुक्ति युगापनं ॥ ॐ उगुयन्मुदवां ग्रीपापू ॥ वलि ॥ ॥

नमः ॥ ~~रु. म. सु. न. न. न. न.~~ ॥ नु य ध्या सन या य ॥ ॥ अ ॐ लि ॥
 नै. सु. गु. ली. म. व. ना. य. डो. य. दी. न. कि. स. हि. ना. य. गु. पा. य ॥ ३ ॥ वलि
 ॥ ३ ॥ न. ल. स. पू. जा ॥ नै. म. धा. सन. पा. य ॥ नै. म. ग. ल. य. न. य. या. य
 ॥ ३ ॥ वलि ॥ न. क. म. ड. ॥ ॥ की. मा. त्री. पू. जा ॥ नै. म. यू. त्रा. सन.
 या. य ॥ नै. क. की. मा. त्री. या. य ॥ ३ ॥ वलि ॥ न. कि. म. ड. ॥ ॥
 न. ल. वलि ॥ नै. म. ल. ॥ नै. क. क. गु. या. ला. य. वलि. म. ड. २. स्वा. हा ॥ नै. वा.

व. क. ना. था. य. वलि ॥ नै. म. ग. ल. य. न. य. वलि ॥ नै. यां. सर्व. या. गि. नी
 र्था. वलि ॥ नै. तां. या. म. लु. य. वलि ॥ नै. सर्व. र्था. द. व. र्था. वलि ॥
 नै. सर्व. र्था. र. क. पु. न. पि. भा. च. त्रा. क. स. किं. न. त्र. ना. ग. य. क. य. क. नी. र्था.
 व. र्था. व. क. र्था. गु. रु. न. क. र्था. अ. क. अ. कि. नी. र्था. वलि ॥ नै. ह. ह. स.
 र. वलि ॥ ॥ स. क. च. त. या. ड. हा. य. क. ड. न. य. ॥ नै. ह. म. ल. म. गु. यी. ०
 सिं. हा. सन. पी. ० ॥ न. य. पी. ० क. गु. य. क. गु. स. दा. ह. पु. स. दा. रु. दि

य
वसिष्ठिः समस्तं कृपायूनमावर्तिं ॥ उत कान्कं यत्किंचित् न
र्वै नृदयाशनमावर्तिं ॥ ॥ धनं धनं काउदवत्तानयनं
सिंदूराकृतपूषात्वं कृप ॥ कृपाया नित्राकनं ॥ ॥ धनं धनं
पूजा ॥ ॥ धनं नित्रायार्थं धूपदीपपूजा ॥ ॥ धूपनय ॥
वनसतिगसाकृतं नानागंधैः पुष्पत्रितं ॥ आघ्रायं सर्वं नवा
नां ॥ धूपं यं पुतिं गृह्णां ॥ ॥ मन्त्रतय ॥ स पुका समस्तदीप

सर्वततिमित्राय हं ॥ सर्वं कृपायूनं कर्तुं ॥ धीपायं पुति गृह्णा
तां ॥ ॥ न विद्यमानं धनं पुष्पैः कृपियकाउः ॥ धनं नित्राय
यार्थं ॥ न विद्यतय ॥ अन्नं त्रसं मस्तु दिव्यं ॥ त्रसं मस्तु दिव्यं ॥
मयानि वदितं गुरुः ॥ गुरुनय त्रसं ध्वजी ॥ ॥ स सावासा कृ
य ॥ रुला रुलादि मूलादिः ॥ कृकं त्रसं मस्तु दिव्यं ॥ अमुजदिव
यकानां ॥ रुलायं पुति गृह्णां ॥ ॥ धनदयावत्ताका कृप

॥ तद्येनयाय प्रत्यक्षं कुरुवालेनार्पयामिनमः ॥ धर्मं
विंशतिनियमांशमालकायाय ॥ ॥ धर्मं नगीउगुर्देजसा ॥
॥ उगुर्देजदेवीतयायामिनमः ॥ ॥ स्वर्णं गीसिद्धिलक्ष्मीं
तयायामिनमः ॥ ॥ पुनराजमनगरा ॥ नैर्दंते संयुनेराजम
नीर्गसुध ॥ ॥ धनयुतिष्ठाः नायन ॥ न ॥ सुर्गोदेकवने
कारव ॥ ॥ धनमुखं बुद्धिं कुरुया ॥ ॥ ५ यथायथा ॥ अपम

२ कलमया उं हं स १० ॥ वां स्वाहा

लापूजा ॥ ॥ कायथडा नित्ययागुलिमालकानियाय ॥ ॥
॥ उगुर्देजया ॥ ॥ स्वर्णं स्वाहा ॥ १० ॥ ॥ स्वर्णं स्वाहा ॥ १० ॥ ॥ रुमवतिर्या
॥ ॥ स्वर्णं स्वाहा ॥ १० ॥ ॥ सुर्गो ॥ १० ॥ ॥ सुर्गो स्वाहा ॥ १० ॥ ॥
॥ दं कयं गृहानस्वा ॥ ॥ ॥ मंतल ॥ दयक आसा
गया ॥ ॥ नैर्गसुधमन्दलाकालश्च आदिथडा मालकानिवा
न ॥ धनउगुर्देजया ॥ ॥ इति त्वं निष्कषत्रायाः ॥ न कुरुय कुरुय

आशा अरु काशि

2179

I

ASHA ARCHIVES

नसत्तावकथन॥

कायः पोतः ५॥

सिंधुः मुमुक्षुः वंद्यः साक

कर्मपुत्रात्

आयच्छियदयकरुका

१॥ अथ सत्तथ

सिंधुः मुमुक्षुः

वंद्यः

१॥ अथ सत्तथ

कायः पोतः

सिंधुः मुमुक्षुः

वंद्यः

दशुसाः ५॥

१॥ अथ सत्तथ

सिंधुः मुमुक्षुः

वंद्यः

१॥ अथ सत्तथ

सिंधुः मुमुक्षुः

वंद्यः

कायः पोतः

सिंधुः मुमुक्षुः

वंद्यः

१॥ अथ सत्तथ

सिंधुः मुमुक्षुः

वंद्यः

कन्या। पसंभा मुयं दं ह्यु ग व ली न मा मुने ॥ सर्व रू ख प म दं गी
इति तं कृत्वा त्रिनी। हं सि नी य त मा द वीः सिद्धि लक्ष्मी न मा मा हं
॥ य वाम ग म ॥ य वाम ग म ॥ य वाम ग म ॥ य वाम ग म ॥ य वाम ग म ॥ य वाम ग म ॥
न सिद्धि लक्ष्मीः य वाम ग म ॥ य वाम ग म ॥ य वाम ग म ॥ य वाम ग म ॥ य वाम ग म ॥ य वाम ग म ॥
मूर्ति निव द कि रा तं न मा मि ॥ ला का सै न स नि हा द वीः शुभा
रू द ध धा त्रि नी न म र्त्त वे ॥ श्री द वीः रु द ध धा त्रि नी न मा मुने ॥ ३

यंति मंगल ॥ रु द ध धा त्रि नी क पा त्रि नी। इ र्ग क मा नि वा क
पुः स्वा रु ख धा न मा मुने ॥ न म स्तु ती म स ना य ॥ यो य दी त्रि नि
य व। रु द ध धा त्रि नी या न्व स्तु ॥ पा तु मां य व ना त्म ज ॥ वि घ्न ध ना
य वी ना यः वि ध्व नू पा य तं न म ॥ सर्व वि घ्न रु द ध ॥ सर्व धां तिः
न मा मुने ॥ को मा त्री म यू गा त्रु राः त्र कां गी त क वा सि नीः ॥
का रु विं इ मू द्रा यः गु द्ध ध्व त्री न मा मुने ॥ श्री सं व रु मं य ना

तकमयदनिहि नानन्दमकि ४ सुतीनाः सुखि न्यायव
गुष्कं लवकुलकलगतं यंचकं चान्यषट्कं । चत्वारः ४ यंच
कान्य ४ येन न पिच पुत्रस्तु तत्त्वमं उलनः संसृष्टं अनगम
नमतगुत्रवर्तं रुत्रवर्तं श्रीकृष्णं ॥ अथ ग्राधसहस्रमालिः क
यं न हं निर्ममगा । दासाह । मेति मां मृत्वाः कुमस्वयनमं ध
त्री ॥ मंगुलीन विद्याहनेः रुकि हीनं तथेव च । तत्सर्वत्रः

कुमांदवाः कुर्यात्पुत्रमं धवत्री ॥ यथा वानपु रुत्राहः
कवर्तं रुवपुत्रानन । तत्तु देवविद्यागानाः धांति रुवपुत्रा
त्रली ॥ अस्मत्सर्वं कुरु य पूर्वकुरुय कामनार्थं सात्रय
य ॐ पूर्यदे गोपूजाविधौ तत्सर्वं विधियत्रिपूष्टुममु ४ ॥ क
तन ॥ नमस्तु त्रयाय ॥ दक्षिणाय ॥ ॥ विंदविय ॥ नम
श्रीनाथाय नि ॥ ॐ ॥ नं स नृपाया लं सन हा यथव कं

चथननियः स्नानयवया के कायमगडा मं
सचाद स्नानवयाडा कुर्यः पुसादकायः थडा मा
लकाया डाडा ॥ ॥ ॥ ॥ धनंजिनवमियूः
कायनः पूजाविंदविय लं धनकं ॥ धनं धनका
डा ॥ चपियूजायाय ॥ चपिलं स्वनेसिलः चिथः जाकि
स्नानगयः ॥ ॥ ॥ पूजा ॥ उं कलिकालिव डं धात्री

लारुदलुयनम ॥ ३ ॥ ॥ ॥ धनिये सूर्यपूजा ॥ तु
निनारुतसिचकाडा देव धं दखे साचकं तया ॥ ॥ लं स्व
नधालमलुलदयकं ॥ यद्युयातस्तानयाचकं ॥ चथनद
सं कपालसं ॥ जाकिस्नानं चकं ॥ ॥ ॥ ॥ ददयाय
नम ॥ ॥ ॥ गनपूजा ॥ धूय दीपे तय ॥ सूर्यचनकं ॥
कं स्नानलं स्वकायाडा ॥ ॥ ॥ ॥ सयनका डाडा वानं ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यस्य या नमयति नरः विन्धु कर्म लक्ष्मी मही नं नमो भगवते
दया ॥ ॥ कल्याण नमो स्वामी दाता मं कृपया ॥ ॐ श्री गणेशाय
सर्वत्र कृपया पूर्व कृपया कामना यं सा न दीयमान न वसीत
वैष्णवी को मा त्री देवो यो उग्र वधु दयो सां गमये स गणपति
वा नाये ॐ मं कृपया वक्रि देव तं तु यम हं घातयिष्ये ॥ नाल
ते ॥ ॥ पूर्व जन्म कृता पापाः पशु जन्म निजाय गे ॥ ॐ ह्रीं क्लीं
ह्रीं क्लीं

यति व्याघ्रः दिव्य लार्क ह गच्छति ॥ ॥ मूल हारा कल्या
य ॥ श्री लक्ष्म्यः श्री लक्ष्मी मत्तमयः स कृपया न कं तीर्थ ना न
कं ॥ वा कं कृपया अ कृपया ॥ ॥ धर्त धून का अ श्री चो नं स्व
या लं स्व न होय ॥ वं धन नित्यः पूती न अ हा अ या द स्वा
न का या अ कृपया ॥ पुसा द काय ॥ धर्ति न व सी पूजा या वि
धि ॥ ॥ धर्त न नित्य कृपया ल न या विधि ॥ पूजा या सा

उधून का आ विंद विय ॥ थन कल स सक (मल ति दा उ)
 कल न या अ विष क कय ॥ म गु न मा रु नी सक (म ति
 दा उ) ॥ म गु नः मा रु नी कय ॥ कं र सक (मल ति दा उ)
 कं र कय थ का लि न की न या तः का उ फ नः प सा रु ला
 उः त र्थ न या य ॥ रु ति सा दे व या क कय ॥ ॥ थ न धून केः
 उ कल न या अ विष क थ उ त का यः गु न या त अ ग म त

न व रा सः क (मल ति दा उ) ॥
 या उः सकल जा नं विय ॥ थ नं थ न ति य ॥ गु न या त अ
 ग म त या उ सकल या नं विय ॥ य सा द का या उः व लि वि
 स ऊ न या य ॥ सूर्य सा मि था य ॥ द्र या या वा क नं ॥ ॥
 थ नं त्रि न गु थी या य ऊः दे व स्ना ना दि च तः जा किः ऊ न म
 काः स्ना न कयः द्र या या मि लो क वा दा उ ॥ थ न सूर्य सा
 मि था य ॥ ॐ अ या स्म त् स व्दे न कृ त य पूर्व क उ य क म ना

न व रा सः क (मल ति दा उ) ॥
 या उः सकल जा नं विय ॥ थ नं थ न ति य ॥ गु न या त अ
 ग म त या उ सकल या नं विय ॥ य सा द का या उः व लि वि
 स ऊ न या य ॥ सूर्य सा मि था य ॥ द्र या या वा क नं ॥ ॥
 थ नं त्रि न गु थी या य ऊः दे व स्ना ना दि च तः जा किः ऊ न म
 काः स्ना न कयः द्र या या मि लो क वा दा उ ॥ थ न सूर्य सा
 मि था य ॥ ॐ अ या स्म त् स व्दे न कृ त य पूर्व क उ य क म ना

वहुसुतय ॥ दृष्टि नय ॥ सुसुवतयाऽः सलीऽऽमिलान
कापूय ॥ धति कूरुयाविधि ॥ ॥ दगसाः कलनाऽऽनाय
उकलूयुताकपयवपुताकनय ॥ ॥ कूरुसः कूरुऽऽकलूय
ताकपयवपुताकनय ॥ मूइवात्रनय ॥ रूरुस्वाननयमाल

१ आवेमसुनविद्या ॥ ॥ अं हं स ॥ दीवर्षवर्ष आवम मंव मंव कूरु कूरु
द ॥ ॥ बूरुति ॥ पूरु आदिसयाय ॥ ॥ उं कीं कूं माहा हंग वि कुं क
मनि कूं माहायानिमलुते मनि कुं नमः साहा ॥ वकाणविषां कलि ॥ ३
॥ उं कीं कूं कूं नमः साहा ॥ गुरु मगी सवकाणकाप ॥ १ ॥
॥ उग्रवक्षसमा मुमकु ॥ २ ॥ उं कूं कूं आं कीं साहा ॥ को मागी स मलमय ॥
॥ उं नमः रगवकीं रूपाय हां उं कीं सा ॥ १ उं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ नमः रगवनिगुलीक

